International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 06, No. 01(V), January - March, 2024, pp. 28-32

साहित्य में माहिती एवं समूह संचार का योगदान

किरण आर. खेनी*

प्रस्तावना

समुह माध्यम का आज के जन एवं सामाजिक जीवन पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा है कि इसके बिना आज के मानव जीवन की कल्पना करना कठिन है। समुह माध्यम शब्द में समूह भी शामिल है। समुह का अर्थ है जुथ। अतः कहा जा सकता है कि ये समुह माध्यमो एक बड़े समूह के लोगों के लोगो का माध्यम हैं। आज के जनसंचार माध्यमों ने सामाजिक जीवन को बदल दिया है। समुह मध्यमो ने समाज जीवन को अपने अंदर समां के दुनिया की छोटी से छोटी सुचना, जानकारी, उपकरण सेकंडों में प्राप्त कर सकते हैं और उनका उपयोग कर सकते हैं। इसके अलावा, हम कुछ बातों का माहिती का संदेशा के रूप में आदान–प्रदान भी कर सकते हैं।यह सब जनसंचार माध्यमों के कारण आसान और तेज़ हो गया है। और इसीलिए आज के समय – इक्कीसवीं सदी को 'जनसंचार का युग' या ' माहिती व् सुचना का युग' कहा गया है वो यथार्थ है।

औद्योगिक क्रांति के आक्रमण के साथ ही हमने विभिन्न जनसंचार माध्यमों का विकास किया है। जिनमें अखबार, रेडियो, टेलीविजन, कंप्यूटर, मोबाइल, फिल्म जैसे माध्यमों से हम परिचित हैं। और अब जब रोबोट ने प्रवेश कर लिया है, तो आगे का माध्यम कोन सा होगा उसका रोमंच रहता है। इन सभी मीडिया को भारत में कब और किसके द्वारा लाया गया, इसकी भूमिका यहां माहिती और शिक्षा में जन मीडिया के कार्य को रेखांकित करने का एक उपक्रम है।

हमारे यहा जनसंचार माध्यमों की शुरुआत लगभग ई.पू.१४०३ में कोरियाई लोगों द्वारा किया गया है माना जाता है। पहला प्रिंटिंग प्रेस भी 1638 में शुरू हुआ और इसके साथ ही जनसंचार माध्यमों ने भी गति पकड़ी। पहले अखबार की बात करें तो पहला अखबार 1766 में कंपनी के एक असंतुष्ट नौकर द्वारा प्रकाशित किया गया था, जिसका नाम 'विलियम वाल्टस' रखा गया। .लेकिन तत्कालीन सरकार के बारे में लिखने के कारण इसे बंद कर दिया गया और 29 जनवरी 1780 को जेम्स ऑगस्ट हिक्की के 'बंगाल गजट' को भारत का पहला सम्मानित समाचार पत्र माना जाता है। इसीलिए जेम्स ऑगस्ट हिक्की को पत्रकारिता का जनक माना जाता है। यह अखबार इसलिए भी बंद हो गया क्योंकि यह राजनीतिक मामलों को कवर करता था। देश का तीसरा अखबार 'कलकत्ता गजट' या 'ओरिएंटल एडवरटाइजर' था जो 1784 में प्रकाशित हुआ था। इसके बाद आता है 'बंगाल जर्नल्स' जिसने पहली बार मुफ्त में विज्ञापन छापने का चलन शुरू किया। इसी साल 1779 में रिचर्ड जॉनसन की 'मद्रास कूरियर', 1790 में 'बॉम्बे हेराल्ड', 'बॉम्बे कूरियर' जो बाद में 'बॉम्बे टाइम्स' कहलाया। यह वर्तमान पत्र उल्लेखनीय है क्योंकि गुजराती में विज्ञापन प्रकाशित करने वाला यह प्रथम अखबार था। इन सभी वर्तमान पत्रों के माध्यम से प्रेस को अपनी विशिष्ट पहचान मिली। 24 मई, 1818 को भारत का पहला दैनिक समाचार पत्र 'समाचार दर्पण' लॉन्च किया गया था जिसके संपादक जे.सी. मार्श थे। जिसकी कीमत एक

* असिस्टेन्ट प्रोफ़ेसर, उमा आर्ट्स – नाथीबा कॉमर्स महिला कॉलेज, गांधीनगर, गुजरात।

The paper was presented in the National Multidisciplinary Conference organised by Maharani Shree Nandkuverba Mahila College, Bhavnagar, Gujarat on 21st January, 2024.

रुपये थी। आज हमारे पास 'फ्रेंड्स इंडिया' है। 1821 में 'कौमुदी', 1822 में राजा राममोहन राय ने धार्मिक और सामाजिक कारणों के विरोध में 'समाचारो चंद्रिका' शरु किया, 1822 में 'मीरातुल, 1823 में 'लाइसेंस नियमो', 'समाचारपत्रों के मुक्तिदाता', 1824 में हिंदी समाचार पत्र 'उदंता मार्तंड', 1830 में बंगाल में 'बंगदुत', 1831 में गुजराती में 'जामे जमशेद', 1907 में मद्रास में 'रास्त गोफ्तार, 'रामानंद' चटर्जी' आदि विभिन्न भाषाओं के समाचार पत्र निकलने लगे।

1919 में गांधीजी द्वारा 'यंग इंडिया', 1924 में 'हिंदुस्तान टाइम्स', 1942 में दैनिक झाँसी, 1958 में 'दैनिक भास्कर' शुरू हुआ जो भोपाल और ग्वालियर से एक साथ प्रकाशित होता था। और फिर 'मुंबई शा समाचार' अब ' मुंबइ समाचार पत्र' के रूप में जाना जाता है। 'गुजरात समाचार', 'सौराष्ट्र समाचार', 'संदेश' प्रांत के अनुसार प्रकाशित होते हैं। इस प्रकार, समाचार पत्र एक लिखित माध्यम के रूप में दैनिक जीवन की घटनाओं, समाचारों, अहेवाल्, राजनीतिक–सामाजिक मामलों को दर्शाते हैं।

रेडियो के उद्भव और विकास के संबंध में, भारत में पहला रेडियो स्टेशन निजी तौर पर 1924 में मद्रास में शुरू किया गया था, जो अब चेन्नई में स्थित है। तत्कालीन ब्रिटिश सरकार ने इंडियन ब्रॉडकास्टिंग कंपनी को मुंबई और कलकत्ता जैसे प्रमुख शहरों में रेडियो स्टेशन स्थापित करने की अनुमति दी और यही भारत में रेडियो का उदय था। विभिन्न उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए, भारतीय राज्य प्रसारण निगम अस्तित्व में आया और बाद में 1936 में इसे ऑल इंडिया रेडियो द्वारा संचालित किया गया। 1947 में जब भारत को आजादी मिली, तो ऑल इंडिया रेडियो को सूचना और प्रसारण मंत्रालय के तहत एक अलग विभाग के रूप में बनाया गया था। पहला रेडियो कार्यक्रम 20 अगस्त 1921 को प्रसारित किया गया था यह कार्यक्रम संगीतमय था और इसे पुणे में मुंबई के तत्कालीन गवर्नर जॉर्ज लॉर्डे ने सुना था।

1926 में, इंडियन ब्रॉडकास्टिंग कंपनी ने भारत सरकार के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। इस समझौते के कारण, कंपनी ने 23 जुलाई 1927 को अपनी प्रसारण सेवाएं शुरू कीं। बाद के वर्षों में, ये सेवाएं कलकत्ता, मद्रास, लाहौर में भी शुरू की गईं इसके अलावा कंपनी ने भारत सरकार के साथ एक समझौता भी किया। 1930 में इसने ब्रिटिश सरकार से रेडियो तरंगें अपने हाथ में ले लीं और इसे 'इंडियन स्टेट ब्रॉडकास्टिंग सर्विस' का नया नाम दिया। 1934 में रेडियो प्रसारण का एक नया अध्याय शुरू हुआ।1935 में बी.बी.सी ने एक विशेषज्ञ दल भारत भेजा, जिसने एक सर्वेक्षण किया और 1936 में भारत को एक रिपोर्ट दी, जिसमें यह जानकारी थी कि कहां–कहां रेडियो स्टेशन स्थापित किए जा सकते हैं। 1937–38 में लाहौर, दिल्ली, मद्रास, कलकत्ता, लखनऊ में शॉर्ट वेव ट्रांसमीटर स्थापित किए गए हैं। 1936 में, 'भारतीय राज्य प्रसारण सेवा' का नाम बदलकर 'अखिल भारतीय'(।स्- प्छक्प्।) कर दिया गया।

सरदार वल्लभभाई पटेल 1947 में पहले प्रसारण मंत्री थे। 12 नवंबर 1947 में सरदार वल्लभभाई पटेल के कहने पर गांधीजीने एक रेडियो संबोधन दिया था। उनके शब्द थे 'मुझे संचार की गति दिखाई दिखाती है...' आज लगभग 231–35 रेडियो स्टेशन है। 199 मीडियम वेव और 54 शॉर्ट वेव हैं। रेडियो द्वारा आज अलग–अलग समय पर अलग–अलग रेडियो गतिविधियां प्रसारित की जाती हैं। 1950 में रेडियो में संगीत कार्यक्रम, 1956 में विभिन्न मनोरंजन सेवाओं का शुभारंभ, 1985 में रेडियो का लाइसेंस रद्द करना और रेडियो से संबंधित घटनाई घटती है।

टेलीविजन की बात करें तो 1959 में यूनेस्को की सहायता से प्रायोगिक तौर पर आकाशवाणी द्वारा टेलिविजन की शैक्षिणिक सेवा शुरू की गई। 1965 से दूरदर्शन दिल्ली से नियमित सेवा शुरू हुई, जिसमें शिक्षा और मनोरंजन कार्यक्रम प्रमुख थे। 1975–76 में ' साईट'का कार्यक्रम, 1980 मेंविज्ञापन का प्रसारण का प्रसारण, 1982 में दिल्ली में एशियाई खेलो का रंगीन प्रसारण, 1983 में इनसेट–बी उपग्रह के माध्यम से राष्ट्रीय नेटवर्क का शुभारंभ, 1985 में दूरदर्शन ने अपनी प्राइम टाइम आधारित धारावाहिक सेवाएं शुरू कीं जिनमें 'हम लोग', 'बुनियाद' आदि शामिल हैं। गुणवत्तापूर्ण कार्यक्रम भी प्रसारित होने लगते हैं जिसमे 'गणदेवता', 'कहानी', 'भारतः एक खोज', 'मिर्जा गालिब', 'नुक्कड़', 'माल गुडी डेज', 'तेनालीरामा' जैसे सीरियल लॉन्च होते हैं।

1990 में खाड़ी देशों में होने वाली घटनाओं को पहली बार जिवंत प्रसारण के रुपमे दिखाया गया। 1995 में आंतराष्ट्रीय सेवा शुरू हुई, 1999 में खेलकुद और समाचार चैनलो का प्रारंभ हुवा। इस प्रकार, टेलीविजन लोगों तक जानकारी पहुंचाने का सबसे तेज़ माध्यम बन गया, जो रेडियो में संभव नहीं था वह टेलीविजन में संभव हो गया ए दृश्य–श्रव्य रूप में और जिवंत प्रसारण में भी। और ऐसे टेलीविजन के अत्याआधुनिक शो–चैनल विकसित हुए जिनमें अब ए.चडी सेवाएं महत्वपूर्ण बन गई हैं।

अन्य जनसंचार माध्यमों में कंप्यूटर की बात करें तो यह लगभग 3000 वर्ष पुराना है, जिसमें चीन में 'एबकेस' कैलकुलेटर के रूप में उभरा, जो एक यांत्रिक उपकरण है। जिसका उपयोग आज भी चीन, जापान जैसे देशों में सांख्यिकी की गणना के लिए किया जाता है। भारत में कंप्यूटर के युग की शुरुआत 1952 में भारतीय सांख्यिकी संस्थान द्वारा की गई थी। 1951 में आई.एस,आई में 'एनालॉग कंप्यूटर' स्थापित किया गया जो भारत का पहला कंप्यूटर था। उसी वर्ष, भारतीय विज्ञान संस्थान, बैंगलोर में भी एक एनालॉग कंप्यूटर स्थापित किया गया था, जिसका उपयोग विश्लेषक के रूप में किया गया था। सही मायनों में भारत में कंप्यूटर युग की शुरुआत हुई जब आई.एस.आई कोलकाता के पास न केवल भारत का पहला इलेक्ट्रॉनिक कंप्यूटर था, बल्कि इसकी स्थापना के साथ ही भारत जापान के बाद कंप्यूटर तकनीक अपनाने वाला एशिया का दूसरा देश बन गया था। इस तरह यह कंप्यूटर भी खास था। 1956 में न्त्स नाम का एक और कंप्यूटर मिला। जो ष्मै–2ड से बड़ा था जो रशिया से खरीदा गया था। इस कंप्यूटर में 32 बिट्स थे। इसमें डायनामिक मैग्नेटिक टेप के साथ इनपुट के रूप में कार्ड और आउटपुट के रूप में एक प्रिंटर का उपयोग किया जाता था। 1979 ये दोनों कंप्यूटर बंद पद गई । फिर 1801 में डेटा प्रोसेसिंग सिस्टम वाले कंप्यूटरों, 1979 में ष्पेश्रन के प्रवेश के साथ कंप्यूटर का भारत में तेजी से विकास शुरू हुआ। फिर मेमोरीस्टोरेज कंप्यूटर, ट्रांजिस्टर का उपयोग, मेमोरी में स्टोर करने वाले कंप्यूटर, मेमोरी से लेकर सब कुछ एक ही चिप पर संभव बन जाता है।

कंप्यूटर के बाद सबसे विकसित माध्यम मोबाइल–सेलफोन है। भारत में मोबाइल उपयोगकर्ताओं की संख्या तेजी से बढ़ रही है। 31 जुलाई 1995 को पश्चिम बंगाल की तत्कालीन मुख्यमंत्री ज्योति बसुन ने तत्कालीन केंद्रीय मोबाइल मंत्री सुखराम से बात की थी। इस तरह्ब बरी बरी हर कंपनी अलग अलग एप,फीचर वाले मोबाइल का निर्माण करती रही हैं। इसके अलावा, टैबलेट, लैपटॉप जैसे जनसंचार माध्यम भी हैं.. चूंकि ये किसी तरह से उपरोक्त मीडिया में शामिल हैं, इसलिए मैंने यहां उनके बारे में बात नहीं की है।

उपरोक्त सर्वेक्षण माध्यम कहीं न कहीं सूचना एवं शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। रेडियो कार्यक्रम विभिन्न श्रोताओं को ध्यान में रखकर प्रस्तुत किये जाते हैं। एफ.एम(थ्.ड) की सुविधा के माध्यम से मौसमी समाचार, शहर में होने वाली घटनाओं, सड़क अवरोधों की जानकारी देते हैं ऐसे मे रेडियो आज लोगों का समय बचाता है । साहित्यिक गतिविधियों का एक भाग रखकर लोगों को नाटक, कहानी, ग़ज़ल जैसी विधाओं से परिचित कराना आदि विभिन्न उद्देश्यों के साथ कार्य कर रहा है। रेडियो के माध्यम से प्रतिदिन 82 भाषाओं और विशेष बोलियों में 509 विभिन्न प्रकार के समाचार, सूचनाएं आदि प्रसारित होते हैं। इस प्रकार, स्थान, वातावरण, समय और विचार की दृष्टि से रेडियो सर्वव्यापी हो गया है। रेडियो की सबसे बड़ी बात यह है कि इसे कहीं भी ले जाकर सुना जा सकता है और चूँकि यह एक श्राव्य माध्यम है इसलिए इसे हर कोई सुन सकता है,और ऐसे मे लोगो सावधानी बरत सकते है या सुनी हुई जानकारी का लाभ उठा सकता है।

चूंकि टेलीविजन एक श्रव्य–दृश्य माध्यम है, इसलिए हर जानकारी को आसानी से सटीक और सक्षम रूप से संप्रेषित किया जा सकता है। अन्य जनसंचार माध्यमों की तुलना में भी, टेलीविजन को सूचना, मनोरंजन और शिक्षा प्रदान करने के लिए सबसे व्यापक और सबसे तेज़ माध्यम के रूप में पहचाना जाता है। यह न केवल लोगों को जागरूक बनाता है न केवल स्थान, प्रकृति, पर्यावरण से परिचित करवाता है, बल्कि इस माध्यम से ज्ञान, विज्ञान और विचार में नवीनता लाने का सक्रिय प्रयास भी करता है।

भारत में टेलीविजन की शुरुआत सार्वजनिक शिक्षा प्रदान करने के साधन के रूप में की गई थी और यही कारण है कि टेलीविजन के शुरुआती दौर में शाला जीवन और सामाजिक शिक्षा केंद्र में थे। आज भी

टेलीविजन के माध्यम से समाज के लोगों तक शिक्षा के बारे में जानकारी पहुंचाई जा रही है। विभिन्न टीवी धारावाहिक और चैनल के माध्यम से। जिनमें मीडिया परिवेश में वास्तविक तत्वों को ढालकर मनोरंजन के साथ इतिहास को पुनर्जीवित करने का इरादा है, लेकिन साथ ही लोगों के मनमे भावना, वीरता और बलिदान पर गर्व हो सके ऐसे गुणों की पेशकश करवाते है और इससे आने वाली पीढ़ी और युवाओं में यह सब गुण अपने आप विकसित हो पाऐ ऐसा छुपा आशाय भी रहता है। ऐसी श्रेणीमें 'चक्रवर्ती अशोक', कौन बनेगा करोड़पति', 'महाभारत', 'रामायण', 'मिर्जागालिब', 'तेनालीरामा', 'कालभैरव', भारतः एक खोज', 'चाणक्य', 'विक्रम–वेताल', 'जोधा अकबर', 'बीरबल', 'विष्णुपुराण' आदि जैसे धारावाहिकों शामिल है । इसके अलावा अलग अलग विज्ञापन भी इस तरह काम करती है जेसे की,'एक कदम शिक्षा की और', 'दैनिक भास्कर का विज्ञापन', 'पी – जी शिक्षा द्वारा बनी बिहू की कहानी', 'शिक्षक और विद्यार्थी का विज्ञापन' आदि।

इस प्रकार, एक ही माध्यम से शिक्षा के विभिन्न आयामों को एक साथ कवर करके बच्चों और वयस्कों तक शैक्षणिक जानकारी पहुँचाता है। 'भारतः एक खोज जैसी शृंखला पुराण,इतिहास और वर्तमान ऐसे तीन कालखंडों को ध्यान में रखते हुए एक समृद्ध और दस्तावेज़ीकरण की दृष्टि से भी बहुत बड़ा कार्य करता है। यहां तक कि रामायण, महाभारत के माध्यम से भी हमारी संस्कृति और संस्कृति की एक महान परंपरा देखी जा सकती है। जिसके माध्यम से यह सत्य, ईश्वर पर विश्वास, बुराई का विनाश और अच्छाई की जीत जैसे सामाजिक कल्याणकारी गुणों को सिंचित करने में उपयोगी हो जाता है। अगर हम टेलिविज़न को माहिती प्रदान करने का माध्यम मानते है तो उसका कम ही माहिती प्रदान करना है।बिना जानकारी के आज एक बी चैनल नहीं देखा जाता। हर चैनल में किसी न किसी तरह की जानकारी दी जाती है। टीवी सीरीज है तो सामाजिक मान–सम्मान, रीति–रिवाज, शिष्टाचार के बारेमें तो समाचार चैनल में देश और दुनिया में होने वाली घटनाओं के बारे में बात करना, इसके खिलाफ उठाए जाने वाले उपायों के बारे में बात करना, लोगों के विचारों को प्रस्तुत करना इससे जुड़े हुई पुलिस – अदालत आदि के मत को बताना यह सब मिडिया दिखता है। डांस शो के माध्यम से नृत्य की विभिन्न शैलियों, 'इंडिया गॉट टैलेंट' जैसे शो के माध्यम से लोगों की कला और शिल्प को उचित मंच प्रदान करता है । इस माध्यममे प्राकृतिक आपदाओं या धार्मिक त्योहारों का जिवंत प्रसारण आदि इस माध्यम के आकर्षित कार्यक्रम रहते है। साथ ही यह माध्यम सबसे प्रभावी माध्यम है,क्युकी घर के कोने में बैठकर दुनिया के किसी भी कोने से कृषि क्षेत्र से जुड़ी गतिविधियों, राशिफल, राजनीति की विभिन्न हलचलों, मौसमी बदलावों, घटनाओं और सूचनाओं को देखने और समजानेमें यह माध्यम सक्षम है। .

फिल्मों की भूमिका शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण होती जा रही है। 'इंग्लिश–विंग्लिश', '3 इडियट्स', 'सुपर 30', 'हिंचकी', 'यूरीः द सर्जिकल स्ट्राइक', 'गद्दारः द प्रेम कहानी', 'तारे जमीन पर', 'आई एम कलाम', १२वी फेल' जैसी फिल्में ऐतिहासिक मामलों से जुडी हुई घटनाई और भली– बुरी बातो को दिलचस्प तरीके से पेश किया जा रहा है। साथ ही शिक्षा के प्रति लोगों की सोच बदलने में '3 इडियट्स', सुपर 30', इंग्लिश–विंग्लिश', '१२वी फेल' जैसी फिल्मों का योगदान अहम रहा है।

फिल्मों के जरिए अलग–अलग देशों की संस्कृति, अलग–अलग शहरों, अलग–अलग देशों के रीति–रिवाज, रहन–सहन, खान–पान की जानकारी और कई अन्य चीजें फिल्मों में झलकती हैं। तो वहीं 'चक दे इंडिया', 'एम.एस.धोनी', 'अजहर', 'दिल बोले हड़िप्पा', 'इकबाल', 'पटियाला हाउस' आदि फिल्मों में विभिन्न खेलों के प्रति जागरूकता पैदा करने और देश के लिए खेलकर देश को गौरवान्वित किया जाता है। मनोरंजन को मामूली विवरणों के साथ प्रदान किया जाता है। वास्तविक घटनाओं को दर्शाने वाली फिल्मों में 'भारत', 'यूरीः द सर्जिकल स्ट्राइक', 'बॉर्डर', 'केदारनाथ', 'मोहन–जो–दारो' आदि शामिल हैं। वहां डांस या विभिन्न थीम बेस फिल्में भी आई हैं। ये सभी फिल्में किसी न किसी मकसद से बनाई जाती हैं । इस प्रकार, फिल्मों का प्रावधान भी टेलीविजन की तुलना में अधिक प्रभावी रहा है।

जब कंप्यूटर और मोबाइल की बात आती है तो ये दोनों आज सबसे अधिक उपयोग किए जाने वाले माध्यम हैं। आज, कंप्यूटर किसी चीज़ के बारे में ज्ञान प्रदान करने या विभिन्न पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन और वीडियो

कॉल के माध्यम से लाइव कुछ सिखाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन गया है। आज इन्टरनेट की सुविधा होने के कारण ऊँगली के एक स्पर्श के साथ सब कुछ बहुत ही आसान हो गया है । इसके साथ ही अलग–अलग ऐप्स और फीचर्स से किसी भी भाषा को सीखना या समझना संभव हो गया है। मैसेजिंग में तेज गति वाले मोबाइल भी आज कंप्यूटर जैसे फीचर्स देते हैं। आज इसका फायदा कोई भी उठा रहा है, चाहे वह पढ़ा–लिखा हो या अनपढ़। जहाँ कंप्यूटर उपलब्ध नहीं है, वहाँ एक छोटा सा मोबाइल आपके सभी काम करने का एक प्रभावी साधन बन गया है। यहां किसी भी जानकारी को सीखने या समझने की भी सुविधा यह एक माध्यम दे रहा है। यहां किसी भी जानकारी को सीखने या समझने की भी सुविधा है। यह माध्यम सूचना और जागरूकता लाने, फाइलों को सहेजने, किसी बात का दस्तावेजीकरण करने या उसे मजबूती से फैलाने, किसी बुरे व्यवहार को रिकॉर्ड कर उसे वायरल करने और कई सूचनाएं और जिम्मेदारियां प्रदान करने में भी उपयोगी है, जिससे आप अपना स्व–बचाव भी कर सकते है ।

हर मीडिया के आगमन के साथ एक धारणा यह भी थी कि पुराना मीडिया नए मीडिया के सामने टिक नहीं पायेगा लेकिन आज हर मीडिया अपनी विशेष क्षमता और मीडिया सुविधाओं के कारण उतना ही जीवित है जितना अपनी स्थापना के समय था। मीडिया अंततः प्रिंटिंग प्रेस का ही परिणाम है। यह भी नहीं भूलना चाहिए कि, इस प्रकार, प्रत्येक माध्यम एक अलग भूमिका निभाता है, जिनमें से सूचना और शिक्षा के केवल दो पहलुओं पर यहां चर्चा की गई है।

❖◆❖